नालन्दा पर बौद्ध का प्रभाव

दुर्लभ बोरी

नालन्दा में तथागत प्रायः विश्राम हेतु ठहरा करते थे। लेकिन मुख्य कर्मभूमि के रूप में इस स्थल को प्रश्रय नहीं दिया गया था। फिर भी यह स्थल बौद्ध धर्म से प्रभावित था। भगवान बुद्ध के प्रिय शिष्य सारिपुत्र और मौदगल्यायन नालंदा के समीपस्थ ग्रामों के ही थे। ये दोनों ब्राह्मण कुलीन थे और उनमें बचपन से ही गाढ़ी मित्रता थी। यह मित्रता कई पीढ़ियों की थी। ऐसा कहा जाता है कि दोनों एक ही दिन उत्पन्न हुए थे। उनका रहना–सहना, पढ़ना–लिखना साथ–साथ होता था। एक बार दोनों साथ–साथ कहीं पड़ोस के गाँव में मूक अभिनय देखने गये। उसके पश्चात् दोनों सन्यासी हो गये और राजगृह में संजम के आश्रम में अध्ययन करने लगे। इन दोनों ने यद्यपि अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया था तथापि इच्छित ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाई।